माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियां की शिक्षा मे सामाजिक कारकों से संबंधित समस्याओं का एक अध्ययन

पंकज यादव
शोधार्थी शिक्षाशास्त्र,
मदरहुड वि.वि. रुड़की
(उत्तराखंड)

डा. अनिल कुमार
सह शोध निर्देशक,
विभागाध्यक्ष बी.एड. विभाग,
आर.एस.एम. (पी.जी.)
कॉलेज धामपुर (बिजनौर)

डा. विशाल शर्मा
शोध निर्देशक, सह–आचार्य,
शिक्षा विभाग, मदरहुड वि.
वि. रुड़की (उत्तराखंड)

1. प्रस्तावना

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करना वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत् प्रगति और आर्थिक विकास की कुंजी है। सार्वभौमिक उच्चतर स्तरीय शिक्षा वह उचित माध्यम है, जिससे देश की समृद्ध प्रतिभा और संसाधनों का सर्वोत्तम विकास और संवर्द्धन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व की भलाई के लिए किया जा सकता है। अगले दशक में भारत दुनिया का सबसे युवा जनसंख्या वाला देश होगा और इन युवाओं को उच्चतर गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराने पर ही भारत का भविष्य निर्भर करेगा। **(NEP–2020)**

शिक्षा, सामाजिक न्याय और समानता प्राप्त करने का एकमात्र और सबसे प्रभावी साधन है। समतामूलक और समावेशी शिक्षा न सिर्फ स्वयं में एक आवश्यक लक्ष्य है, बल्कि समताममूलक और समावेशी समाज निर्माण के लिए भी अनिवार्य कदम है, जिसमे प्रत्येक नागरिक को सपने संजोने, विकास करने और राष्ट्र हित में योगदान करने का अवसर उपलब्ध हो। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ऐसे लक्ष्यों को लेकर आगे बढ़ती है जिससे भारत देश के किसी भी बच्चे के सीखने और आगे बढ़ने के अवसरों में उसकी जन्म या पृष्ठभूमि से सम्बन्धित परिस्थितियाँ बाधक न बन पायें। यह नीति इस बात की पुनः पुष्टि करती है कि स्कूल शिक्षा में पहुँच, सहभागिता और अधिगम परिणामों में सामाजिक श्रेणी के अंतरालों को दूर करना सभी शिक्षा क्षेत्र विकास कार्यक्रमों का मुख्य लक्ष्य होगा। **(NEP–2020: 6.1)**

शिक्षा ही मानव विकास का मूल साधन है, जिससे एक व्यक्ति अपनी जन्मजात शक्तियों को विकसित करता है, अपने ज्ञान और कला–कौशल को बढ़ाता है और अपने व्यवहार को बदलता है, जिससे

वह सभ्य, सुसंस्कृत और योग्य नागरिक बनता है। शिक्षा द्वारा ही मानव अपना आर्थिक विकास करता है एवं जीवन में पूर्णता प्राप्त करता है। शिक्षा द्वारा ही संसार में वैज्ञानिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति होती है। अर्थात् शिक्षा मानव जीवन की अमूल्य निधि है। शिक्षा विकास की वह प्रक्रिया है। जो जीवनपर्यन्त सरिता के नीर की भांति कल–कल निनाद करती हुई निरन्तर प्रवाहित रहती है।

शिक्षा द्वारा बालक के साथ–साथ समाज का भी विकास होता है। अतः बालक के साथ–साथ शिक्षा का समाज के लिए भी महत्व है। क्योंकि बालक अपनी शिक्षा समाज में रहकर ही समाज के लिए प्राप्त करता है। इस प्रकार बालक पूर्ण व्यक्तित्व प्राप्त कर सामाजिक व्यक्तित्व का निर्माण करता है। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके फलस्वरूप बालक के शैक्षिक विकास के लिए परिवार, समाज, विद्यालय तथा पास–पड़ौस आदि सामाजिक संस्थायें उत्तरदायी होती है।

शिक्षा घर, परिवार और सामुदायिक प्रयासों से प्रारम्भ होकर जीवन के हर चरण गर्भधारण से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति के विकास के सभी पहलुओं को संभव बनाती है। शिक्षा मनुष्य की सीखने की क्षमता के साथ जन्म से जुड़ी है और यह जीवन के लिए एक मूलभूत आवश्यकता है। शिक्षा मानव विकास के लिए आवश्यक है और समाज की जीवनधारा का काम करती है। यदि समाज व्यक्ति का प्रतिबिंब है, तो मनुष्य शिक्षा का दर्पण है।

शिक्षा की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होतीय यह जीवन भर चलती रहती है। शिक्षा की शुरुआत घर और समुदाय से होती है, फिर औपचारिक शिक्षा स्कूल और कॉलेज के माध्यम से मिलती है। आज की शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित नहीं, बल्कि यह व्यक्ति के संपूर्ण विकास और निरंतर व्यक्तिगत उन्नति के लिए आवश्यक वातावरण प्रदान करती है।

छात्र के समग्र विकास की जिम्मेदारी मुख्य रूप से शिक्षकों के कंधों पर होती है। विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, और सामाजिक विकास में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इसलिए, शैक्षिक संस्थानों का यह दायित्व बनता है कि वे शिक्षकों को सावधानीपूर्वक विचार–विमर्श के साथ संगठित और गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्रदान करें। ऐसा प्रशिक्षण शिक्षकों को सक्षम बनाता है कि वे अपने विद्यार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण और व्यापक योगदान दे सकें।

बच्चों के मनोवैज्ञानिक अध्ययन से पता चलता है कि प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत क्षमताएं और मानसिकताएं अलग–अलग होती हैं इसलिए, शिक्षक को चाहिए कि वे बच्चों के इन व्यक्तिगत मतभेदों को समझें और उनकी शिक्षा को उनके अनुसार अनुकूलित करें। इससे हर बच्चे को अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार बेहतर शिक्षा प्राप्त हो सकेगी, जो उनके समग्र विकास के लिए लाभकारी होगी।

यह देखा गया है कि बच्चों का शैक्षणिक स्तर अलग–अलग होता है, भले ही उन्हें एक ही विषय एक ही शिक्षक द्वारा पढ़ाया जा रहा हो। सीखने के सिद्धांत के अनुसार, प्रत्येक बच्चे की शिक्षा उसकी रुचियों और क्षमताओं के अनुरूप होनी चाहिए। इसका मतलब यह है कि सफल शिक्षण केवल पाठ्यक्रम को समझाने तक सीमित नहीं होता, बल्कि बच्चे के व्यक्तिगत हितों को भी पूरा करना चाहिए।

हालांकि, शैक्षणिक सफलता को प्रभावित करने वाले कई अन्य कारक भी होते हैं। इनमें सामान्य और विशिष्ट योग्यता, विषय रुचि, अध्ययन की आदतें, पारिवारिक वातावरण, स्कूल सामाजिक, आर्थिक स्तर, सामाजिक वातावरण आदि।

किसी भी समस्या का उद्‌गम उस क्षेत्र से संबंधित होता है जिसकी समाज और देश को आवश्यकता होती है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है। छात्र प्राथमिक स्तर पूरा करने के बाद माध्यमिक स्तर पर आते हैं, जो उच्च शिक्षा के लिए छात्रों को तैयार करता है। इसलिए उच्च शिक्षा का स्तर काफी हद तक माध्यमिक शिक्षा द्वारा निर्धारित होता है। प्राथमिक स्तर पर साक्षरता लाई जाती है, जबकि माध्यमिक स्तर पर उस साक्षरता का ज्ञानार्जन में उपयोग किया जाता है। इस स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में अनेक बाधाएं सामने आती है।

माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच सेतु का कार्य करती है। जहां प्राथमिक शिक्षा ज्ञान के द्वार की कुंजी है और विश्वविद्यालय शिक्षा ज्ञान का भंडार प्रदान करती है, वहीं माध्यमिक शिक्षा व्यक्ति को जीवन–यापन और नेतृत्व के लिए तैयार करती है। इसलिए इस स्तर को शिक्षा की पूर्ण इकाई माना जाना आवश्यक है। माध्यमिक शिक्षा से ही प्राथमिक स्तर के अध्यापक, समाज के कार्यकर्ता और विश्वविद्यालयों के छात्र मिलते हैं। इस प्रकार, देश की शिक्षा प्रणाली में माध्यमिक शिक्षा का विशेष महत्व है। अधिकांश छात्रों के लिए यह शिक्षा प्राप्ति की अंतिम सीढ़ी होती है, लेकिन कई छात्रों को सामाजिक बाधाओं के कारण इस स्तर तक पहुंचने में कठिनाई होती है।

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, इसलिए बालक के सामने आने वाली शिक्षा प्रक्रिया मे सभी सामाजिक कारकों का अध्ययन आवश्यक है जो शिक्षा में बाधा उत्पन्न करते हैं और शैक्षिक प्रगति को प्रभावित करते हैं। बालक की शिक्षा का समाज से घनिष्ठ संबंध होता है, क्योंकि परिवार और विद्यालय इसके दो प्रमुख स्रोत हैं। यदि ये दोनों सही ढंग से कार्य नहीं करते, तो अनेक सामाजिक बाधाएं उत्पन्न होती हैं। शोधकर्ता ने महसूस किया कि शिक्षा में बाधा उत्पन्न करने वाले कारकों में सामाजिक कारक सबसे प्रभावशाली होते हैं, क्योंकि बालक जन्म से मृत्यु तक समाज के संपर्क में रहता है। इस अध्ययन में केवल सामाजिक बाधाओं को शामिल किया गया है ताकि इन्हें दूर कर शिक्षा में अवरोध हटाए जा सकें और विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति स्थिर बनी रहे, जिससे वे समाज और राष्ट्र को अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार सक्रिय योगदान दे सकें। इसी कारण शोधकर्ता ने सामाजिक बाधाओं को अपने शोध का विषय चुना है।

2. समस्या कथन

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शिक्षा मे सामाजिक कारकों से संबंधित समस्याओ का एक अध्ययन।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शिक्षा पर सामाजिक कारको से सम्बंधित बाधाओ का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शिक्षा में पारिवारिक (आर्थिक) बाधाओ का अध्ययन करना।

4. अध्ययन की परिकल्पनायें

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शिक्षा पर सामाजिक कारको से सम्बंधित बाधाओ के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शिक्षा में पारिवारिक (आर्थिक) बाधाओ के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है शोध विधि का चयन प्रदत्तों के आकार एवं शोध कार्य के उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं के अनुसार किया गया है।

6. अध्ययन क्षेत्र एवं समग्र

प्रस्तुत शोध में जनपद बिजनौर के माध्यमिक स्तर में अध्यनरत विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

7. प्रतिदर्श एवं तकनीक

शोध कार्य में प्रतिदर्श का चयन संयोगिक प्रतिचयन के आधार पर किया गया है प्रतिदर्श में माध्यमिक विद्यालयों में 100 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

8. शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में बिना शाह (1985) द्वारा निर्मित व्यक्तिगत प्रदत्त अनुसूचित तथा शिक्षा में सामाजिक बाधा प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

9. प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां

परीक्षण से प्राप्त प्रदत्तों के विवेचन विश्लेषण एवं निष्कर्ष हेतु शोध कार्य में मध्यमान मानक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

10. प्रदत्तों का विवेचन एवं विश्लेषण

शोध कार्य में सर्वेक्षण से प्राप्त प्रदत्तों की गणना एवं विवेचन प्रयुक्त सांख्यिकी विधियों द्वारा की गई है तथा प्रदत्तों का विश्लेषण एवं विवेचन परिकल्पनाओं में प्रयुक्त चरों के आधार पर किया गया।

11. परिकल्पना परीक्षण

शोध कार्य में निर्मित परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त परिणामों निम्न प्रकार है।

परिकल्पना 1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शिक्षा पर सामाजिक कारको से सम्बंधित बाधाओ के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका– 1

विभिन्न समूहों के छात्र–छात्राओ के स्वास्थ्य समस्या के प्रति मध्यमान, मानक विचलन मानक त्रुटि, स्वतंत्रता के अंश तथा क्रांतिक अनुपात 'टी'

क्र.सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	स्वतंत्रता के अंश	क्रांतिक अनुपात / 'टी'
1	नगरीय छात्र	30	1.60	1.08	0.33	58	3.94**
	नगरीय छात्राये	30	2.90	1.45			
2	ग्रामीण छात्र	20	2.40	1.30	0.47	38	1.81
	ग्रामीण छात्राये	20	3.25	1.59			
3	सम्पूर्ण छात्र	50	1.92	1.23	0.27	98	4.07**
	सम्पूर्ण छात्राये	50	3.02	1.48			

* प्रदर्शित करता है– .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

** प्रदर्शित करता है– .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

तालिका– 1 के अध्ययन से स्पष्ट है कि स्वास्थ्य समस्या के प्रति नगरीय छात्रों का मध्यमान 1.06 तथा छात्राओं का माध्यम 2.90 है नगरीय छात्र व छात्राओं में छात्रों का मध्यमान छात्राओं से कम है इससे स्पष्ट होता है की नगरीय छात्राएं नगरीय छात्रों की अपेक्षा सामाजिक बाधाओ में स्वास्थ्य समस्या से अधिक प्रभावित होती है। अतः यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण छात्र व छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 2.40 तथा 3.25 है और मानक विचलन क्रमशः 1.30 तथा 1.59 है ग्रामीण छात्रों का मध्यमान छात्रों से कम है अर्थात छात्र स्वास्थ्य समस्या से छात्रों की अपेक्षा कम प्रभावित होते है

परिकल्पना– 2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शिक्षा में पारिवारिक (आर्थिक) बाधाओ के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका– 2

विभिन्न समूहों के छात्र–छात्राओ के आर्थिक स्थिति के प्रति मध्यमान, मानक विचलन मानक त्रुटि, स्वतंत्रता के अंश तथा क्रांतिक अनुपात/'टी'

क्र.सं.	स्मूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	स्वतंत्रता के अंश	क्रांतिक अनुपात/'टी'
1	नगरीय छात्र	30	4.47	1.15	0.32	58	2.50**
	नगरीय छात्राये	30	5.37	1.31			
2	ग्रामीण छात्र	20	4.80	1.14	0.41	38	1.59
	ग्रामीण छात्राये	20	5.45	1.40			
3	सम्पूर्ण छात्र	50	4.66	1.16	0.25	98	2.96**
	सम्पूर्ण छात्राये	50	5.40	1.35			

*प्रदर्शित करता है– .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

**प्रदर्शित करता है– .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

तालिका– 2 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सामाजिक बाधाओ में आर्थिक स्थिति के प्रति नगरीय छात्र में छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 4.57 तथा 5.37 है नगरीय छात्राओं का मध्यमान छात्रों से अधिक है इससे स्पष्ट है की नगरीय छात्राएं नगरीय छात्रों की अपेक्षा आर्थिक स्थिति से अधिक प्रभावित होती है। अतः यह स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्र व छात्राओं का आर्थिक स्थिति के प्रति मध्यमान क्रमशः 4.80 तथा 5.45 है और मानक मिश्रण कम से 1.14 तथा 1.40 है ग्रामीण छात्र व छात्राओं में छात्राओं का अधिक मध्यमान यह दर्शाता है की छात्राएं छात्रों की अपेक्षा पारिवारिक (आर्थिक कारकों) की समस्या से अधिक प्रभावित होती है।

12. निष्कर्ष– प्रदत्तों के विवेचन एवं विश्लेषण तथा परिकल्पना से प्राप्त निष्कर्ष निम्न प्रकार है

1 तालिका–1 से निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नगरीय छात्राएं नगरीय छात्रों की अपेक्षा सामाजिक बाधाओ में स्वास्थ्य समस्या से अधिक प्रभावित होती हैं एवं छात्र स्वास्थ्य समस्याओं से कम प्रभावित होते हैं।

2 तालिका–2 से प्राप्त निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सामाजिक बाधाओ में पारिवारिक (आर्थिक कारकों) आर्थिक स्थिति नगरीय छात्र व छात्राओं की शिक्षा में महत्वपूर्ण बाधा है।

13. शैक्षिक निहितार्थ

उपरोक्त निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की शिक्षा में आज भी सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक कारक विद्यमान है NEP–2020 के अनुसार कक्षा छठी से आठवीं का GER 90.9 प्रतिशत जबकि कक्षा 9–10 का GER 79.37 प्रतिशत और कक्षा 11–12 का GER 56.5 प्रतिशत है यह आंकड़े दर्शाते हैं कि किस प्रकार सामाजिक आर्थिक कारकों

के कारण से कक्षा–5 और विशेष रूप से कक्षा–8 के बाद नामांकित विद्यार्थियों का एक महत्वपूर्ण अनुपात शिक्षा प्रणाली से बाहर हो जाता है वर्ष 2017–18 के NSSO के 75 वे राउंड हाउसहोल्ड सर्वे के अनुसार 6–17 वर्ष के बीच की उम्र के विद्यालय न जाने वाले बच्चों की संख्या 3.22 करोड़ है इन बच्चों को यथासंभव पुनः उन्हें शिक्षा प्रणाली में शीघ्र वापस तभी लाया जा सकता है जब शिक्षा में आने वाली सामाजिक आर्थिक बाधाओ को दूर किया जाना चाहिए तथा तभी 2030 तक प्री स्कूल से माध्यमिक स्तर में 100 सकल नामांकन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

संदर्भ सूची

1. गैरेट, एच.ई. (1979): शिक्षा एवं मनोविज्ञान मे सांख्यिकीय
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986): शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
3. राय, पारसनाथ (1993): अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
4. मालविका गांगुली (1994): सोसियो इकोनॉमिक स्टेट्स एंड स्कोलोस्टिक एचीवमेंट, इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, वॉल–24(1)–(1984–94)
5. सिंह, अरुण (2002): मनोविज्ञान, समाजशास्त्र व शिक्षा मे शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, बम्बई
6. राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (2005): अनुसूचित जाति–जनजाति के बच्चों की समस्याये (राष्ट्रीय फॉक्स समूह) एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
7. श्रीवास्तव, डी. एन. (2009): सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान, साहित्य भवन, आगरा
8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020): शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली